खड़िया जनजाति में परम्परागत पर्व त्योहार एवं आधुनिकता का प्रभावः एक मानव बैज्ञानिक अध्ययन

शोधार्थी सेलेस्टीन सोरेंग

मानव विज्ञान विभाग, रांची विश्वविधालय,

रांची

की वर्ड–खड़िया, जनजाति, परम्परागत, त्योहार, आधुनिकता।

परिचय–

झारखंड एक जनजातीय क्षेत्र है जहाँ 32 प्रकार की जनजातियां रहते आ रही है जिसकी अपनी विशिष्ट परम्परागत संस्कृतियाँ पायी जाती है। डेलकी, दुध और पहाड़ी खड़िया की जीवन यापन जन्म से लेकर मृत्यु तक वनों उत्पाद, खेती–बारी, मजदूरी एवं अन्य आर्थिक क्रिया विधि से सम्पन्न होता है। खड़िया जनजाति के लोगों का वर्ष भर पर्व त्योहार 80% से अधिक वन एवं कृषि क्षेत्र से संबंधित होती है।

खड़िया समुदाय में धार्मिक प्रमुख पाहान, कालो की अहम भूमिका होती है और गाँव की सभी प्रकार की धार्मिक कार्यक्रम को पूरा करता है। साथ ही खड़िया गाँव प्रमुख करटहा की भी अहम भूमिका होती है। खड़िया की खान–पान, रहन–सहन बिल्कुल सदा होता है। तथा किसी भी पर्व त्योहार में घर के प्रमुख द्वारा अपने पूर्वजों एवं बेडोलडाय को स्मरण किया जाता है ताकि गाँव, परिवार की संबृद्धि एवं सुख शांति, सुरक्षा कायम रहे। खड़िया में पुरखा से चली आ रही संस्कारों को विधि पूर्वक रखने का प्रयास वर्तमान में भी किया जा रहा है।

तकनीकः–

प्रश्नावली सह अनुसूची के माध्यम से डेलकी और दूध खड़िया जनजाति की तथ्य संग्रह मानवशास्त्रीय तकनीकि के द्वारा किया गया है जो मेरे पीएच० डी से संबंधित अध्ययन क्षेत्र झारखंड राज्य के सिमडेगा जिला में निवास करने वाले खड़िया जनजाति से लिया गया है। साथ ही सेकेंडरी स्त्रोत से भी तथ्य प्राप्त किया गया है।

खड़िया समाज, मुख्य रूप से दूध खड़िया जो जिला के समीप निवास करते हैं उनका झुकाव आधुनिकता का प्रभाव दिखाई देता है जो गैर खड़िया समुदाय के संपर्क के कारण 20–25साल की तुलना में पर्व त्योहार मनाने के पद्धति में परिवर्तन दिखाई देती है वहीं, डेलकी खड़िया में परिवर्तन नहीं दिखाई देता है लेकिन, आज भी परम्परागत विधि विधान द्वारा सभी पर्व में पुरखों एवं बेडोलड़ाय को स्मरण दोनों खड़िया में किया जाता है जो घर के प्रमुख द्वारा रसवा घर में पुजा पाठ कोई भी त्योहार में किया जाता है।

खड़िया जनजाति में साल भर पर्व त्योहार 70% से अधिक आर्थिक क्रियाकलापों एवं उससे संबंधित होते हैं जो खड़िया जनजातीय समुदाय की विशेषता को दर्शाता है। एवं राज्य के प्रमुख जनजाति संथाल, मुंडा, उरांव, कवर, चीक बड़ाइक, लोहरा आदि से भिन्न होता है। परम्परागत रूप से खड़िया जनजातीय समाज में महिना का प्रारंभ फागुन महीना से माना जाता है और इस दिन पहान उपवास रखता है एवं उसी दिन फागुन कटता है और नए महीने का शुभारंभ करता है।

वर्तमान खड़िया समाज में ख्रीस्तीय प्रभाव पड़ा है और सामान्य रूप से आधुनिक खड़िया में पौष (जनवरी) को नया महिना में माना जाता है। दुध एवं डेलकी खड़िया पर्व–त्योहार तथा अनुष्ठान पूरे सामुदाय के मध्य धूम–धाम से मनाया जाता है।

खड़िया में महिनाओं के अनुसार पर्व त्योहार–

हिन्दी	खड़िया	पर्व
चैत्थ (अप्रैल)	जाङ कोरेल	मंडा पर्व
बैसाख (मई)	मुमन भेरेल	धान बुनी, मंडा पर्व
ज्येष्ठ (जून)	कासरेल	जेठ जतरा
आषाण (जुलाई)	विइङ भेरेल	कादोलेटा, आसाड़ी पूजा
श्रावन (अगस्त)	राजा भेरेल	रक्षा बंधन
भाद्रपद (सितम्बर)	गुज्लू भेरेल	नवाखानी, करमा पूजा
आश्विन (अक्टुबर)	गोडाङ	जीतिया
कार्तिक (नवम्बर)	बाअ भेरेल	सोहराई, दीपावली
अगहन (दिसम्बर)	जोरिनूबरेल	देव उठान, क्रिसमस पर्व
पौष (जनवरी)	माघरेल	छेतरा, नववर्ष
माघ (फरवरी)	ओनमो ओरेल	भादो पर्व (धांगर)
फाल्गुन (मार्च)	फागुरेल	होली, ईस्टर

उपरोक्त पर्व–त्योहार खड़िया जनजाति का मौसमानुसार सम्पन्न होता है। जो सामाजिक–सांस्कृतिक, धार्मिक, विधि–विधान द्वारा पहान अथवा खड़िया परिवार के बड़े–बुजुर्ग द्वारा किया जाता है। यह त्योहार कृषि, प्रकृति पुजा सामूहिक और व्यक्तिगत रूप से किया जाता है। जो अपने पुरखों से सदियों से किया जा रहा है।

खड़िया पर्व–त्योहारः–

खड़िया जनजाति के मौसमानुसार पर्व–त्योहार सालों भर में मनाये जाते हैं त्योहार सदियों से पुरखों से चली आ रही है। यह आज भी खड़िया का अभिन्न अंग है सभी पर्व–त्योहार एक ओर जहाँ प्राकृतिक से सीधा सम्बंध है तो वहीं दूसरी ओर सामाजिकता तथा जीविका के साधनों पर निर्भर देखा गया है। इन त्योहारों का सम्बंध कहीं न कहीं प्राचीन रीति–रिवाजों, परम्पराओं आरवेट जीवन से लेकर कृषि कार्यों से सीधा सम्बंध मानते है साथ ही दुःख–सुख, शांति से जुड़ा होता है। इसलिए अपने पूर्वजों, अथवा बेडोलड़ाय की पूजा–पाठ तथा मंत्रोचारण और देवी–देवताओं के नाम पर हँड़िया को जमीन में एक दो बूंद गिराकर याद किया जाता है। उसके पाश्चात ही स्वयं अथवा सभी लोगों को पीने के लिए देते हैं। डेलकी खड़िया एवं दुध खड़िया देव–पितर की प्रतिदिन घर के मुखिया द्वारा भोजन से पहले एवं हंड़िया पीने से पूर्व याद किया जाता है।

सूर्य पूजाः—

खड़िया में सूर्य पूजा आसाड के महीनों में पूजा किया जाता है जिसमें घर के मुखिया द्वारा एवं अविवाहित बच्चे शामिल होते हैं। इस पूजा में मुख्य रूप से मुर्गा की बलि, अरवा चावल, एवं तापन हंड़िया का प्रयोग किया जाता है। खड़िया समाज में बेडोलड़ाय को सर्व शक्तिमान माना जाता है जिसकी सदियों से पुजा—पाठ किया जा रहा है। आज खड़िया में सूर्य पूजा (बेड़ो) को सर्व शक्तिशाली माना जाता है जिसके द्वारा सभी मानव जाति को जीविकोपार्जन करते हैं। वर्त्तमान में संवसार खड़िया में भी आसाड़ के महीनों में पूजा—पाठ किया जाता है परंतु जो खड़िया परिवार ईसाई धर्म को अपना चुके हैं उस परिवार में सूर्य पूजा वर्त्तमान पीढ़ी द्वारा नहीं किया जा रहा है। तथा अपनी धार्मिक क्रिया विधि को परम्परागत रूप से पूर्वजों द्वारा चली आ रही है जो अन्य परम्परा में ह्रास होता दिखाई दे रहा है।

पूर्वजों की पुजाः—

खड़िया अपने वंश के मृत पूर्वजों की आत्मा की याद वर्षों से करते आ रहे हैं घर के मुखिया द्वारा पुजा पाठ सम्पन्न किया जाता है। दूध एवं डेलकी खड़िया समाज में खाना खाने, हंडिया पीने आदि में कहीं भी, किसी भी जगह पूर्वजों के नाम पर दो या तीन दाना जमीन में गिरा देते हैं।

सरहुल पूजा/जंकोरः—

खड़िया जाति में अपने परम्परागत रीति—रिवाजों द्वारा सरहुल पूजा को धूम धाम से मनाया जाता है बड़ा पर्व माना जाता है। इसका सीधा सम्बंध प्राकृतिक से जोड़ा जाता है। असल में जंकोर पूजा को ही सरहुल माना जाता है। इसकी पूजा गाँव के बाहर सरना में किया जाता है। इस पूजा में खड़िया वन—देवी—देवताओं की पूजा की जाती है। इस पूजा को पहान द्वारा विधि विधान के साथ सम्पन्न किया जाता है।

श्री शिव नारायण खड़िया (उम्र—59) के अनुसार सरना में जाने से पहले पहान सखुवा की डाली काटता है और उसे सरना में गाड़ देता है इसके पाश्चात गाँव के लोग भी डाली काट कर सरना में पूजा—पाठ के लिए गाड़ देते है। इसी मध्य पहान चावल (अरवा), हल्दी, तेल का मिश्र बनाता है। सफेद मुर्गा को बलि देने के लिए चारा भी खिलाया जाता है जिसे सरना में बलि दिया जाता है। ताकि देवी—देवता प्रसन्न हो एवं हंड़िया भी चढ़ाया जाता है। जिसे प्रसाद के रूप में बाद में वितरण किया जाता है।

जंकोर पूजा खड़िया का बड़ा त्योहार माना जाता है। दरअसल खड़िया सामुदाय प्राचीन समय में अपना जीवन बसर पूर्णतः जंगलों में व्यतीत करते थे। तब उनकी अर्थव्यवस्था एवं पर्व—त्योहार प्राकृतिक से सम्बंधित होता था। क्योंकि मूलतः जंगलों से उत्पादित होने वाले वनों से होता था और इन्हीं के माध्यमों से पूरे साल भर जीवन चलता था। सरहुल पर्व बंसत ऋतु के आगमन के समय भी रहता है साथ ही बेडोलड़ाय के साथ—साथ जंगल देवताओं को खुश रखने हेतु किया जाता है। दुध खड़िया खाशकर शहरों के नजदीक रहने वाले 80 प्रतिशत ईसाई धर्म को अपनाकर धीरे—धीरे परम्पराओं को भूलते जा रहे हैं।

धान बुनीः—

खड़िया जनजाति में धानबूनी पर्व काफी प्राचीन समय से चली आ रही है। जेठ महिना के अंतिम समय में सम्भवतः निश्चित समय पर गाँव के पाहान द्वारा सबसे पहले खेतों में धान का बीज डालता है। इस दिन पहान उपवास रखता है तथा सबसे पहले स्नान करके खूंट देवता एवं देवी–देवता को मुर्गा की बलि देता है। बलिदान देने के बाद वह नया टोकरी में धान लेकर खेतों की तरफ जाता है एवं अपने खेतों मे सात–आठ मुठ्ठी धान छिड़क कर आ जाता है। इसके बाद गाँव के सभी लोग अपने–अपने खेतों में धान बुनने का काम करत हैं।

वर्त्तमान समय में डेलकी एवं दुध खड़िया दोनों में धानबुनी परम्परा अपने पुरखों से चली आ रहीं परम्परा है जो आज भी विद्यमान है। इस धानबुनी का उद्देश्य है कि इस वर्ष अच्छी बारिस हो तथा कृषि कार्य में अच्छी वृद्धि हो।

कदलेटाः–

कदलेटा का अर्थ 'कीचड़ में लेटना'। यह त्योहार सम्भवतः आसाड़ (जुलाई) में होता है। इस अवसर में पहान उपवास रखता है। दूसरे दिन सुबह ही सूप में चावल, भेलवा की डाली तथा कुल्हाड़ी लेकर सरना पहुँचते हैं। गाँव के लोग खूंट पूजा करता है जिसमें वह सफेद मुर्गा की बलि देता है। पूजा के बाद पाहान सरना एवं गाँव में गाड़ा जाता है। ऐसे करने से ऐसा विश्वास है कि फसल को बुरी नजर से रक्षा हो सके। बाद में पहान को गाँव वाले कंधे में उठाकर घर लाते हैं जहाँ उनकी पत्नी पैरों को धोती है एवं उस दिन गाँव में पहान मुर्गा का मांस खाता है। एवं रासी हंडिया भी पीता है।

आज भी, यह परम्परा उत्सव के रूप में खड़िया समाज में धूम–धाम से आसाढ़ महीने में मनाया जाता है। पहान के साथ गाँव के लोग भी कादो में घुसकर भेलवा का डाली गाढ़ते है। जिससे खेतों में फसलों को जीव–जन्तुओं से रक्षा, कीडे–मकोड़े से रक्षा बेडोलड़ाय करें। बाद में डाली का कुछ अंश घरों कें छतों पर भी रखते है। विश्वास है कि घरों में शांति, समृद्धि आये। इस तरह डेलकी एवं दुध खड़िया के बीच कदलेटा को एक उत्सव के सामान मनाया जाता है।

तीन साली पूजा–

तीन साली पूजा खड़िया के बीच किया जाता है इस पूजा में तीन साल में एक बार बड़े धूम–धाम से मनाया जाता है। गाँव के अन्य जाति उरांव, मुंडा, कवर, लोहरा, चिक बड़ाइक सहित अन्य जातियाँ शामिल होती है। यह वर्षा के समय धान रोपने के पूर्व पाहान/कालो द्वारा परम्परागत रीति–रिवाजों द्वारा बड़े बुर्जुगों के देख–रेख में होता है। इस पूजा में महिलाएँ भाग नहीं लेती हैं। तथा इसी दिन कृषि से संबंधित चीजों का मूल्य निर्धारण भी किया जाता है। धान की रोपनी, लोहारों को धान देना, इत्यादि का मूल्य पक्का किया जाता है। वर्त्तमान में भी तीन साली पूजा विधमान है। परंतु शहरों के नजदीक रहने वाले खड़िया के बीच ऐसी परंपरा नहीं दिखता है।

नवाखानी/जोओडेमः–

जोओडेम खड़िया में कहा जाता है डेलकी एवं दुध खड़िया दोनों में यह पूजा पाठ होती है। गर्मी ऋतु में धान बोने के पश्चात वर्षा ऋतु के मध्य अनेक पर्व–त्योहार शुरू हो जाते हैं। इन त्योहारों में रोपनी, गोंदली नवाखानी, गाड़ा नवाखानी करम पूजा, बूढ़ी करम, बंदई पर्व का मौसम रहता है। असल में इस त्योहार में डेलकी एवं दुध खड़िया में पारंम्पारिक रीति–रिवाजों से पूजा–पाठ के बाद ही नवा चावल का ग्रहण परिवार करते हैं। पाहान इस पर्व में अपने ईस्ट

देव को याद करते हैं तथा नये चावल ग्रहण करने की अनुमति मांगते हैं। इसके लिए पाहान कसेर मुर्गे की बलि भी देता है उसके बाद ही मुर्गे को प्रसाद के रूप में बनाकर खाया जाता है।

वर्त्तमान में भी डेलकी एवं दुध खड़िया के बीच में नावाखानी पर्व बड़े धूम धाम से मनाया जाता है। दोनों खड़िया सरना में पूजा पाठ के बाद ही नये चावल का ग्रहण करते है। नया अन्न ग्रहण से पहले घर का मुखिया अपने पूर्वज को याद करता है ताकि किसी प्रकार का संकट न आ जाय।

बंदई महापर्वः—

बंदई महापर्व कार्तिक पूर्णिमा में मनाया जाता है। बुंदई पर्व में खड़िया लोग इसकी तैयारी काफी समय पहले से करते हैं। जिसमें प्रमुखतः गोलंग को चावल से विशेष रूप में तैयार किया जाता है जिस दिन बंदई पर्व होता है सभी जानवरों को अच्छे से धांगर अथवा घर का सदस्य नदी या तालाब में लेकर जाकर नहलाता है फिर सभी जानवरों को घर लाने के बाद जानवरों का पैर तापन हंड़िया से पैर को धोया जाता है एवं कुछ भाग को खिलाया भी जाता है। उस दिन धांगर अथवा घर का मालिक तेल में हल्दी मिलाकर जानवरों को लगाता है। और सबसे पहले जानवरों को परम्परागत पूजा—पाठ के पश्चात घर में बनी सभी चावल से सम्बंधित खाने—पीने को थोड़ा—थोड़ा दिया जाता है। पूजा—पाठ में घर का मालिक ''गोरेया देवता'' से प्रार्थना करता है कि उस के पशुओं को किसी भी प्रकार का हानि न पहुँचे। पूजा—पाठ के बाद सभी जान वरों को घी अथवा कुजरी का तेल शरीर में लगाया जाता है इसे ही भैंस चुमावन कहा जाता है।

वर्त्तमान में परिस्थितियों के अनुसार खड़िया लोग ढालने का प्रयास किया जा रहा है। जिसे डोकलो सोहोर द्वारा निर्मित नियम कानून का समाज में करटाहा के माध्यम से किया जा रहा है। **करमा पर्वः—**

खड़िया जनजाति में करम पूजा को प्रत्यक्ष रूप से कृषि कार्य से जोड़ कर देखा जाता है। सदियों पूर्व खड़िया जनजाति में करम पूजा को अहमियत न देकर कदलेटा पर्व धूम—धाम से मनाया जाता था। लेकिन तात्कालीन समय में गैर—जातियों से सम्पर्क के परिणाम स्वरूप खड़िया जनजाति में भी करमा त्योहार को मनाने का प्रचलन हो गया। त्योहार को मनाने का मुख्य उद्देश्य अच्छी फसल, युवतियों को योग्य वर, स्वास्थ्य संतान तथा निःसंतान माता—पिता को बच्चे प्राप्त हो। साथ ही पूजा—पाठ के लिए करम डालियों को खेतों में गाड़ने से कृषि से सम्बंधित कीड़े—मकोड़े मर जाते हैं। एवं डाली को देवता का प्रतीक माना गया है जिसकी अर्चना से खेतों में उर्वरता शक्ति में वृद्धि हो जाती है। डेलकी एवं दुध खड़िया (संवसार) में करम पूजा को बड़े धूम—धाम से मनाया जाता है। लेकिन, जो खड़िया ईसाई धर्म को अपना चुके है करम पूजा को छोड़ते जा रहे हैं।

ईस्टर एवं जनम परबः—

खड़िया में ईस्टर एवं जनम परब को मनाने का प्रचलन नहीं था। एवं न ही इस पर्व को खड़िया में पुरखों द्वारा मनाया जाता था। लेकिन, दुध एवं डेलकी खड़िया ईसाई धर्म से प्रभावित होकर मनाने लगे हैं। इस अवसर पर जो खड़िया आर्थिक रूप से थोड़ी मजबूत होती है सम्भवतः उनमें केक, अरसा रोटी, छिलका रोटी, दुसका इत्यादि जैसे रोटी बनाया जाता है एवं अपने संगे सम्बंधियों को बुलाकर धूम—धाम से नाच—गाना किया जाता एवं चर्च जाया जाता है। अपने सर्व शक्तिमान ईश्वर बेडोलड़ाय से प्रार्थना किया जाता है एवं धन्यवाद देते है कि इस दिन तक सपरिवार सकुशल रखें। यद्यपि, आज के समय में ग्रामीण एवं शहरी खड़िया परिवार के साथ मुण्डा, हो, उरांव

आज डेलकी एवं दुध खड़िया जनजाति के बीच परम्पराओं रीति रिवाज, खान पान, पहनावा, नियम कानून आदि में लगातार ह्मस हो रहा है फिर भी वे अपनी संस्कृति का पालन का प्रयास भलि–भांति प्राचीन समय से करते आ रहें हैं जो आज भी दिखाई देता है। यद्यपि, आज के युवा पीढ़ी में परम्पराओं, भाषाओं संस्कृतियों का ज्ञान में अभाव भी पाया जा रहा है।

स्त्रोत–

1. प्रो. राय, शरत चन्द्र एंड रमेश चन्द्र राय दा खडियासः भाग–1, 2, 1937

2. टेटे, निकोलस रविनंदन सिन्हा सम्पादन (एस० सी० राय) खड़िया समाज भाग–1 2011,

3. प्रो०ललिता प्रसाद विधार्थी, विजय शंकर उपाध्यायः द खड़ियाः देन एंड नाऊ ए कंपरेटिव स्टडी आफ हिल, दूध, एवं डेलकी खड़िया, 1980

4. न्यूज पेपर, नेट सर्फिंग